



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 24 जनवरी, 2022

राष्ट्रीय बालिका दविस

भारत में प्रतियर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दविस के रूप में मनाया जाता है। इस दविस के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य लिंगभेद के कारण भारतीय समाज में लड़कियों के समकष आने वाली चुनौतियों को दूर करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करना है। यह दविस लड़कियों के प्रतिसमाज के दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता पर जोर देता है। महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा इस दविस को मनाने की शुरुआत वर्ष 2008 में बालिका के अधिकारों और बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण के महत्त्व को रेखांकित करने के लक्ष्य के साथ की गई थी। ध्यातव्य है कि अंतरराष्ट्रीय बालिका दविस प्रतियर्ष 11 अक्टूबर को मनाया जाता है। भारतीय समाज और संस्कृति में सदियों से लैंगिक असमानता एक बड़ी चुनौती रही है। इस भेदभाव और असमानता की शुरुआत लड़की के जन्म लेने से पूर्व ही शुरू हो जाती है। भारत सरकार ने महिलाओं के वरिद्ध भेदभाव की इस स्थिति को बदलने और सामाजिक स्तर पर लड़कियों की स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जसमें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान, 'सुकन्या समृद्धि योजना', बालिकाओं के लयि मुफ्त या अनुदानित शिक्षा और कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में सीटों का आरक्षण आदि शामिल है। माता-पति में बेटियों के प्रतियर्ष और गर्व की भावना को प्रोत्साहित करने हेतु एक सोशल मीडिया अभियान 'सेल्फी वदि बेटी' भी आयोजित किया जा रहा है।

आदिबदरी बाँध

21 जनवरी, 2022 को हरयाणा और हिमाचल प्रदेश सरकारों ने यमुनानगर ज़िले के आदिबदरी में बाँध बनाने के लयि एक समझौते पर हस्ताक्षर कयि। यह बाँध पौराणिक सरस्वती नदी का कायाकल्प करेगा। यह हरयाणा में हिमाचल प्रदेश की सीमा के पास स्थित है। इस स्थान को सरस्वती नदी का उद्गम स्थल माना जाता है। सरस्वती नदी के जीर्णोद्धार से धार्मिक मान्यताओं को भी पुनर्जीवित कयि जाएगा। इस क्षेत्र को तीर्थस्थल के रूप में भी विकसित कयि जाएगा। यह बाँध हिमाचल प्रदेश में 31.66 हेक्टेयर भूमि पर बनाया जाएगा। इसकी चौड़ाई 101.06 मीटर और ऊँचाई 20.5 मीटर होगी। परियोजना की कुल लागत 215.33 करोड़ रुपए है। आदिबदरी बाँध को सोम नदी से भी पानी मलिया जो यमुनानगर में आदिबदरी के पास यमुना नदी में मलित है। बाँध की कषमता हर साल 224.58 हेक्टेयर मीटर जल की होगी। इसमें से हिमाचल प्रदेश और हरयाणा को 61.88 हेक्टेयर पानी मलिया जबकि शेष सरस्वती नदी में प्रवाहित होगा।

लविगि रूट ब्रजि

हाल ही में भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (जेडएसआई) ने यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल का टैग प्राप्त करने हेतु मेघालय के लविगि रूट ब्रजि के लयि कुछ हरति नयियों को रेखांकित कयि है। इन ब्रजिज को जगि कींग ज़रि (Jing Kieng Jri) भी कहा जाता है। इनका नरिमाण पारंपरिक जनजातीय ज्ञान का प्रयोग करके रबर के वृक्षों की जड़ों को जोड़-तोड़ कर कयि जाता है। सामान्यतः इन्हें धाराओं या नदियों को पार करने के लयि बनाया जाता है। मुख्यतः मेघालय की खासी और जयंतिया पहाड़ियों में सदियों से फैले 15 से 250 फुट के ये ब्रजि विश्व प्रसिद्ध पर्यटन का आकर्षण भी बन गए हैं। ये लोचदार होते हैं। इन्हें आसानी से जोड़ा जा सकता है। ये पौधे उबड़-खाबड़ और पथरीली मटिटी में उगते हैं। मेघालय के मुख्यमंत्री ने यूनेस्को को इस राज्य को पहाड़ी राज्य के रूप में मान्यता देने की वकालत की, जसिने इसके नरिमाण के 50वें वर्ष को चहिनित कयि। मेघालय वर्ष 1972 से 21 जनवरी को अपना राज्य स्थापना दविस मनाता है। वन्यजीव वविधिता और स्वास्थ्य कार्ड तैयार करना मेघालय के लविगि रूट ब्रजि के लयि यूनेस्को टैग अर्जित करने हेतु आवश्यक शर्तें होंगी।

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार

गुजरात आपदा प्रबंधन संस्थान (GIDM) और सकिक्मि राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष वनिद शर्मा को आपदा प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य के लयि वर्ष 2022 के सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार हेतु चुना गया है। GIDM को संस्थागत श्रेणी में चुना गया है, वही वनिद शर्मा को व्यक्तिगत श्रेणी में नामित कयि गया है। केंद्र सरकार ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में भारत में व्यक्तियों और संगठनों द्वारा प्रदान कयि गए अमूल्य योगदान और नसिवारथ सेवा को पहचानने तथा सम्मानित करने के लयि वार्षिक पुरस्कार सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार की स्थापना की है। इस वर्ष पुरस्कार के लयि 1 जुलाई, 2021 से नामांकन मांगा गया था और संस्थानों एवं व्यक्तियों से 243 वैध नामांकन प्राप्त हुए थे। इस पुरस्कार की घोषणा हर वर्ष 23 जनवरी को स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है। इसमें पुरस्कृत संस्था को 51 लाख रुपए का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र एवं पुरस्कृत व्यक्तियों को 5 लाख रुपए व प्रमाण पत्र दया जाता है।

